"प्रावैगिक अर्थशास्त्र का क्षेत्र एवं महत्व"

(Scope and Importance of Dynamic Economics)

आर्थिक विश्लेषण मे प्रावैगिक अर्थशास्त्र का भी अपना अलग महत्व है। प्राचीन अर्थशास्त्र (classical Economics) मे भी स्थैतिक एवं प्रावैगिक अर्थशास्त्र दोनो को समान महत्व प्रदान किया गया था। रिकार्डो द्वारा वितरण की समस्याओ (Problems of Distribution) का जो अध्ययन किया गया है उसकी प्रकृति मुख्यतः प्रावैगिक (Dynamic) ही है। उनके संचय का सिद्धान्त (Theory of Accumulation) जो कि बचत पर आधारित है कि प्रकृति भी प्रावैगिक है क्योंकि बचत एक प्रावैगिक धारणा (Dynamic concept) है। लेकिन इसके बाद नवप्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियो (Neo-classical Economists) ने प्रावैगिक अर्थशास्त्र के व्यवहार पर ध्यान नही दिया जिससे यह पीछे पड़ गया। इन अर्थशास्त्रियो का अध्ययन केवल स्थैतिक अर्थशास्त्र पर ही आधारित था। इस उपेक्षा की चर्चा स्वयं मार्शल (Marshall) ने अपनी पुस्तक "Principles of Economics" मे की है। वास्तव मे प्रावैगिक अर्थशास्त्र कुछ उन आर्थिक समस्याओ पर भी प्रकाश डाल सकता है जिसके लिए स्थैतिक अर्थशास्त्र सक्षम नही है। उदाहरण के लिये, आंशिक संतुलन (Partial Equilibrium) एवं निरन्तर परिवर्तन (continuing changes) से सम्बन्धित समस्याओ का अध्ययन केवल प्रावैगिक अर्थशास्त्र मे ही किया जा सकता है। इनके अध्ययन मे स्थैतिक अर्थशास्त्र सहायक नही हो सकता। स्थैतिक अर्थशास्त्र संतुलन की विभिन्न स्थितियो (Different Equilibrium Positions) तथा सन्तुलन की एक स्थिति से दूसरी स्थिति मे होने वाले परिवर्तन (Problems involved in the transition from one equilibrium to another) का कभी भी अध्ययन नही कर सकता। इस प्रकार का अध्ययन केवल प्रावैगिक अर्थशास्त्र मे ही सम्भव है। हम जानते है कि प्रावैगिक अर्थशास्त्र का सम्बन्ध अनुमानो (Expectations) से है। अतः उन आर्थिक समस्याओ का अध्ययन केवल प्रावैगिक अर्थशास्त्र मे ही किया जा सकता है जो व्यक्तियो के मनोविज्ञान (Psychology) पर आधारित होती है। चक्रीय उथल-पुथल की घटनाएँ (Phenomena of Cyclical Fluctuations) तथा दीर्घकालीन विकास से सम्बन्धित समस्याएँ इसी श्रेणी मे आती है। प्रावैगिक अर्थशास्त्र उन शक्तियो (Forces) की भी व्याख्या कर सकता है जो अर्थव्यवस्था को सन्तुलन-पथ (Equilibrium path) से हटाकर असन्तुलन (Disequilibrium) की ओर ले जाती है। व्यापार-चक्र (Business Cycles) की समस्याओ का अध्ययन भी प्रावैगिक अर्थशास्त्र मे ही किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

M T W T F S S
Page No.:
Date:
YOUVA

व्यापार चक्र के अधिकांश सिद्धान्त फ्रिस (Frisch) एवं सैम्युल्सन (Samulson) के प्रावैगिक मॉडलो (Dynamic models) पर आधारित है। इस प्रकार वर्तमान समय मे अर्थशास्त्र के अध्ययन मे प्रावैगिक अर्थशास्त्र का एक महत्वपूर्ण स्थान है और इसका महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

Scanned with CamScanner